अंशुबोधिनी

मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से

अंशुबोधिनी महर्षि भरद्वाज द्वारा रचित एक ग्रन्थ है। इसमें सूरज से प्राप्त ऊर्जा के विभिन्न उपयोग बताये गये हैं। इसमें बिना तार के सन्देश भेजने की बात भी कही गयी है।

अनुक्रम

- 1 परिचय
- 2 सन्दर्भ
- 3 इन्हें भी देखें
- 4 बाहरी कड़ियाँ

परिचय

प्राच्य संस्थान, बडोदरा (Oriental Institute, Vadodara) के पुस्तकालय से बोधानन्द की टीका के साथ 'अंशुबोधिनी' शीर्षक की महर्षि भरद्वाज रचित एक पाण्डुलिपि प्राप्त हुयी है। वास्तव में प्राप्त पांडुलिपि भरद्वाज के १२ अध्याय वाले ग्रंथ में से केवल पहला अध्याय है, जिसका शीर्षक "सृष्ट्याधिकार" (सृष्टि + अधिकार = Evolution of Universe) है जिसमें महाविस्फोट (Big-bang) से अपने सौर मंडल के सूर्य की उत्पत्ति तक का वर्णन किया गया है, जिसमें उपर्युक्त यंत्र जो कि संभवत: उस समय प्रचलित पाँच प्रकार के वर्णक्रम मापक यंत्रों में से एक है जिसे "तम" व्यापक अर्थ में (radiation) के तीन प्रकाशकीय परास (Optical region) अर्थात् अंधतम/पराबैंगनी, गूढ़तम/दृश्य एवं तम (ultraviolet, visible and infrared regions) के मापन में प्रयुक्त होता रहा है।

> चितिचैत्यस्पन्दनेन सृष्टयाद्यतेकमेवहि।
>
> तम: प्रादुरभूद्वेगात्तम स्पृष्टवैवकेवलम्॥
>
> तमेवमूलप्रकृतिरित्याहुंर्ज्ञानवित्तमा:।
>
> तम आसीदितिप्राहतमेवहिसनातनी॥
>
> पश्चात्तस्मिन्चितप्रकाशस्स्वभावात्प्रतिबिंबित :।
>
> तत्सानिध्यबलातन्मूलप्रकृत्यामतिवेगत:॥
>
> अन्धंतमोगूढंतमस्तमश्चेतियथाक्रमम्।
>
> तमांसित्रीण्यजायन्तचित्प्रभामिश्रितानिहि॥
>
> त्रिगुणाइतितान्येवप्रवदन्तिमनीषिण:।
>
> सत्वंरजस्तमइतिगुणा: प्रकृतिसंभव:॥ --- पृष्ठ ८५, अंशुबोधिनी

महर्षि भारद्वाज रचित “अंशु बोधिनी” ग्रन्थ में सूर्य और नक्षत्रों की किरणों की शक्ति पर विचार किया गया है। इस ग्रन्थ में 64 अधिकरण हैं, जिनको छह भागों में विभाजित किया गया है। इनमें से 54 वाँ अधिकरण “विमानाधिकरण” नाम का है। इसके सिवा इन्हीं ऋषि का एक ग्रन्थ “अक्ष-तन्त्र” नाम का है जिसमें आकाश की परिधि और उसके विभागों का वर्णन किया गया है और बतलाया

है कि मनुष्य आकाश में कहाँ तक जा सकता है और उसके बाहर जाने से किस प्रकार वह नष्ट हो सकता है। उसमें विमानों के सम्बन्ध में अनेक ऐसी बातें दी गई हैं जिनको पढ़कर आजकल के मनुष्य आश्चर्य में पड़ जाते हैं। “विमानाधिकरण” में यह सूत्र दिया गया है--[1]

शक्त्युद्गमोदयष्टौ

इस सूत्र पर बौधायन ऋषि ने निम्नलिखित व्याख्या की है-

शक्त्युद्गमो भूतवाहो धूमयानश्शिखोद्गमः। अंशुवाहस्तार मुखोमणि वाहो मरुत्सखः॥ इत्यष्टाधिकरणें वर्गाण्युक्तानि शास्त्रातः।

अर्थात् विमान-रचना और उनके आकाश के चलने की गति के आठ भेद हैं :-

शक्त्युद्गम वर्गम- विद्युत शक्ति से चलने वाले विमान।

भूतवाहः- पंच महाभूत की शक्ति इकट्ठी करके चलने वाले विमान।

धूमयान- भाप अथवा धुँये से चलने वाले विमान।

शिखोद्गमः- पंचशिखी, शिखरीनी, शिखा वति, कुँदशिखी आदि वनस्पतियों के तेल की मोमबत्ती बनाकर उनसे चलने वाले विमान।

अशुवाहः - सूर्य की किरणों की शक्ति से चलने वाले विमान।

तारामुखः - नक्षत्र शास्त्र के अनुसार नक्षत्रों में रस बनकर जो पदार्थ भूमि पर आता है उसके प्रयोग से चलने वाले विमान।

मणि वाहः - हवा में जो उष्णता और बिजली है उसको कुछ यन्त्रों द्वारा पृथक करके उसी शक्ति से चलने वाले विमान।

मरुत्सखाः - हवा में शीत और उष्ण विभाग है उनका आवृत्तिकरण करने से जो शक्ति प्राप्त होती है, उससे चलने वाले विमानों को ‘मरुत्सखा’ कहा जाता था।

सन्दर्भ

1. भारतीय विज्ञान का अपूर्व ग्रन्थ (http://literature.awgp.org/akhandjyoti/edition/1958/May/14) (अखण्ड ज्योति, १९५८)

इन्हें भी देखें

- नारायण गोपाल डोंगरे

बाहरी कड़ियाँ

- अंशुबोधिनीशास्त्रम् (भारत का आंकिक पुस्तकालय)
- अंशुबोधिनी

यह लेख किसी पुस्तक के बारे में एक आधार है। जानकारी जोड़कर इसे बढ़ाने में विकिपीडिया की मदद करें।

"https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=अंशुबोधिनी&oldid=3405985" से लिया गया

- अन्तिम परिवर्तन 06:25, 2 मार्च 2017।
- यह सामग्री क्रियेटिव कॉमन्स ऍट्रीब्यूशन/शेयर-अलाइक लाइसेंस के तहत उपलब्ध है; अन्य शर्तें लागू हो सकती हैं। विस्तार से जानकारी हेतु देखें उपयोग की शर्तें